Amire Ahle Sunnat Se Etikaaf Ke Bare Me 10 Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 344
Weekly Booklet : 344

अमीरे अहले सुन्नत से ए'तिकाफ़ के बारे में 10 सुवाल जवाब

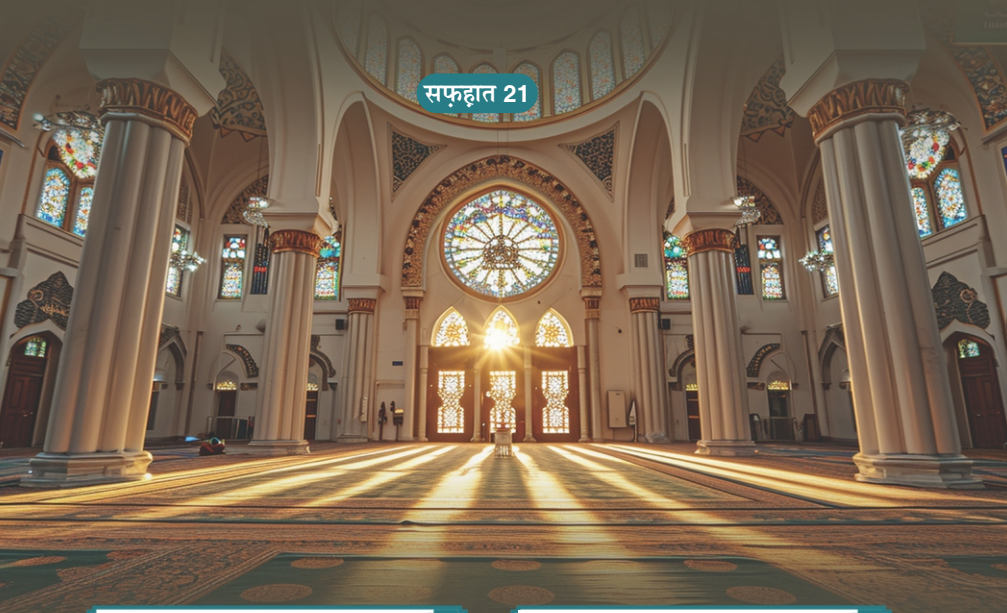

सफ़हात 21

मस्जिद में इफ़्तारी करने की एहतियात 03
मस्जिद में कंघी करना कैसा है ? 04
क्या इस्लामी बहनें इज्तिमाई ए'तिकाफ़ कर सकती हैं ? 10
कितनी उ़म्र के इस्लामी भाई ए'तिकाफ़ करें ? 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत से ए'तिकाफ़ के बारे में 10 सुवाल जवाब**

सिने त़बाअ़त : शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म **1445** हि., फ़रवरी **2024** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत से ए'तिकाफ़ के बारे में 10 सुवाल जवाब**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए Whatsapp, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

अमीरे अहले सुन्नत से ए'तिकाफ़ के बारे में 10 सुवाल जवाब[1]

दुआए ख़लीफ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला : **''अमीरे अहले सुन्नत से ए'तिकाफ़ के बारे में 10 सुवाल जवाब''** पढ़ या सुन ले उसे सुन्नत के मुत़ाबिक़ ए'तिकाफ़ करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''اَكْثِرُوا الصَّلَاةَ عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَاِنَّهٗ مَشْهُوْدٌ تَشْهَدُهُ الْمَلَائِكَةُ وَاِنَّ اَحَدًا لَنْ يُّصَلِّيَ عَلَيَّ اِلَّا عُرِضَتْ عَلَيَّ صَلَاتُهٗ حَتّٰى يَفْرُغَ مِنْهَا

या'नी जुमुआ़ के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो क्यूं कि येह यौमे मश्हूद (या'नी मेरी बारगाह में फ़िरिश्तों की ख़ुसूसी ह़ाज़िरी का दिन) है, इस दिन फ़िरिश्ते (ख़ुसूसी त़ौर पर कसरत से मेरी बारगाह में) ह़ाज़िर होते हैं, जब कोई शख़्स मुझ पर दुरूद भेजता है तो उस के फ़ारिग़ होने तक उस का दुरूद मेरे सामने पेश कर दिया जाता है।'' ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बयान है कि मैं ने अ़र्ज़ की : **(या रसूलल्लाह !)** और आप के विसाल के बा'द क्या होगा ? इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! (मेरी ज़ाहिरी) वफ़ात के बा'द भी (मेरे सामने

---

1 ... ... येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है ।

इसी त़रह़ पेश किया जाएगा) । اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ या'नी **अल्लाह** पाक ने ज़मीन के लिये अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के जिस्मों का खाना ह़राम कर दिया है । فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُرْزَقُ पस **अल्लाह** पाक का नबी ज़िन्दा होता है और उसे रिज़्क़ भी अ़त़ा किया जाता है ।'' (ابن ماجہ، 2/291، حدیث:1637)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सुवाल : क्या पिछली उम्मतों में भी ए'तिकाफ़ होता था या येह उम्मते मुह़म्मदिय्यह के लिये ख़ास है ?

जवाब : ए'तिकाफ़ बहुत ही पुरानी इ़बादत है जैसा कि दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब ''फ़ैज़ाने रमज़ान'' के बाब फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़ के सफ़ह़ा 228 पर है : पिछली उम्मतों में भी ए'तिकाफ़ की इ़बादत मौजूद थी चुनान्चे पारह 1 **सूरतुल बक़रह** की आयत नम्बर 125 में है :

﴿وَعَهِدْنَآ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآىٕفِيْنَ وَ الْعٰكِفِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ۝۱۲۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ''और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर ख़ूब सुथरा करो त़वाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिये ।''

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! त़वाफ़ व नमाज़ व ए'तिकाफ़ के लिये का'बए मुशर्रफ़ा की पाकीज़गी और सफ़ाई का ख़ुद रब्बे का'बा की त़रफ़ से फ़रमान जारी किया गया । मश्हूर मुफ़स्सिर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि मस्जिदों को पाक साफ़ रखा जाए, वहां गन्दगी और बदबूदार चीज़ न लाई जाए, येह सुन्नते अम्बिया है । येह भी मा'लूम हुवा कि ए'तिकाफ़ इ़बादत है और पिछली उम्मतों की नमाज़ों में रुकूअ़ और सुजूद दोनों थे । येह भी मा'लूम हुवा कि

मस्जिदों का मुतवल्ली (मुन्तज़िम) होना चाहिये और मुतवल्ली सालेह़ या'नी परहेज़ गार इन्सान हो। मज़ीद आगे फ़रमाते हैं : त़वाफ़ व नमाज़ व ए'तिकाफ़ बड़ी पुरानी इ़बादतें हैं जो ज़मानए इब्राहीमी में भी थीं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह : 1, अल बक़रह, तह़्तल आयह : 125, स. 29, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/350)

सुवाल : रमज़ानुल मुबारक में बहुत से लोग मसाजिद में इफ़्त़ारी करते हैं, उन के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत से मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : मस्जिद में खाने पीने के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत न करें बल्कि सवाब के लिये निय्यत करें और येह निय्यत फ़क़त़ रमज़ानुल मुबारक में ही नहीं बल्कि सारा साल जब भी मस्जिद में आएं भले एक सेकन्ड के लिये भी तो ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लें। निय्यत के अल्फ़ाज़ येह हैं : نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف या'नी मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की। याद रहे कि येह निय्यत अ़रबी अल्फ़ाज़ में करना ही शर्त़ नहीं है बल्कि अ़रबी अल्फ़ाज़ से निय्यत उसी वक़्त होगी जब दिल में निय्यत मौजूद हो और अ़रबी के मा'ना भी पता हों। फ़क़त़ रटा रटाया कह दिया और ए'तिकाफ़ की निय्यत की त़रफ़ तवज्जोह ही नहीं है तो येह निय्यत नहीं मानी जाएगी। उर्दू बल्कि किसी भी ज़बान में निय्यत कर सकते हैं मसलन मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।

याद रहे कि मस्जिद में खाना पीना सोना जाइज़ नहीं है अलबत्ता अगर ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ली तो अब ज़िम्नन मस्जिद में खाना, पीना, सोना, इफ़्त़ार, आबे ज़मज़म पीना, नियाज़ खाना वग़ैरा सब जाइज़

हो जाएगा। अगर खाना पीना सामने आ गया और ए'तिकाफ़ की निय्यत नहीं की थी तो अब फ़क़त खाने पीने के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत नहीं कर सकते। (درمختار وردالمحتار، 2/525 ماخوذاً, बहारे शरीअ़त, 1/648, हिस्सा : 3) अलबत्ता सवाब के लिये अब भी निय्यत हो सकती है लिहाज़ा निय्यत करने के बा'द कुछ ज़िक्रो दुरूद कर लें मसलन 12 मरतबा दुरूद शरीफ़ या कलिमा शरीफ़ पढ़ लें। 12 के अ़दद से महब्बत की वज्ह से 12 मरतबा पढ़ने का कहा है वरना इतनी बार ही पढ़ना ज़रूरी नहीं। कुछ न कुछ ज़िक्रो दुरूद पढ़ लें, अब चाहें तो खाना पीना और इफ़्तार कर सकते हैं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/368)

सुवाल : मस्जिद में कंघी करना कैसा है ?

जवाब : मस्जिद में कंघी करने से बचना होगा क्यूं कि इस से मस्जिद में बाल झड़ेंगे, अलबत्ता अगर कोई एह़तियात़ से कंघी करता है मसलन चादर बिछा कर करता है ताकि बाल गिरें तो चादर पर गिरें तो इस त़रह़ कंघी करना जाइज़ है। मस्जिद में कंघी करने से मन्अ़ ही करना चाहिये वरना ए'तिकाफ़ में अगर मो'तकिफ़ीन सब जगह कंघियां करना शुरूअ़ कर देंगे तो चूंकि सब को एह़तियात़ करना आती नहीं है इस लिये बाल गिराते रहेंगे ह़ालां कि मस्जिद को साफ़ सुथरा रखने का हुक्म है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/181)

सुवाल : जो इस्लामी भाई ए'तिकाफ़ करने के बा'द दीनी माह़ोल से दूर हो जाते हैं उन्हें दोबारा दीनी माह़ोल में कैसे लाया जाए ?

जवाब : ए'तिकाफ़ करने के बा'द सारे मो'तकिफ़ीन दीनी माह़ोल से दूर हो जाते हों ऐसी बात नहीं। अगर ऐसा होता तो आज हमें येह बहारें नज़र न आतीं। दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता इस्लामी भाइयों की

कसीर ता'दाद ए'तिकाफ़ की वज्ह से ही दीनी माहोल में आई है। दा'वते इस्लामी के मुफ़्ती फ़ुज़ैल रज़ा (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) के दा'वते इस्लामी से वाबस्ता होने का सबब भी ए'तिकाफ़ ही बना, इन्हों ने दीनी माहोल से वाबस्ता होने का वाक़िआ़ ख़ुद बताया था कि येह पहले मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान में पढ़ने आते थे, फिर इन्हों ने दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शिर्कत की। इस ए'तिकाफ़ की बरकत से इन पर ऐसा रंग चढ़ा कि इन्हों ने दर्से निज़ामी (या'नी आ़लिम कोर्स) शुरूअ़ कर दिया और आज اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दा'वते इस्लामी के क़ाबिले फ़ख़्र मुफ़्ती हैं बल्कि मुफ़्तिये इस्लाम बन चुके हैं। इसी त़रह़ दा'वते इस्लामी के कई मुबल्लिग़ीन और ज़िम्मेदारान होंगे जिन्हों ने ए'तिकाफ़ की वज्ह से दीनी माहोल को अपनाया होगा, मुम्किन है कि कई अराकीने शूरा भी ऐसे हों जो ए'तिकाफ़ की बरकत से दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हुए हों।

दा'वते इस्लामी के एक बहुत बड़े ज़िम्मेदार भी ए'तिकाफ़ ही की वज्ह से दीनी माहोल में आए थे। ए'तिकाफ़ करने से पहले इन्हों ने दीनी माहोल में आना जाना शुरूअ़ कर दिया था जिस की वज्ह से इन पर कुछ न कुछ असर हुवा, फिर जब इन्हों ने ए'तिकाफ़ किया तो इन की दुन्या ही बदल कर रह गई। येह अपने उस ए'तिकाफ़ का माहोल ख़ुद बयान करते हैं कि "जब मैं ए'तिकाफ़ में बैठा तो मेरे दोस्त मुझ से मिलने आते थे चूंकि मैं ख़ुद भी मज़ाक़ मस्ख़री का आ़दी था तो वोह मुझे बोलते कि येह सारे ड्रामे छोड़। क्या तू मौलाना लोगों को तंग करने के लिये बैठ गया है? मगर मैं बिल्कुल सन्जीदा हो गया और उन से ऐसा कोई मज़ाक़ न किया।" फिर

इन पर ए'तिकाफ़ का ऐसा रंग चढ़ा कि आज वोह एक अ़ज़ीम निगरान बन कर लोगों के सामने मौजूद हैं और दुन्या की बहुत बड़ी ता'दाद इन की अ़क़ीदत मन्द है। अक्सरिय्यत इन के बयान से मुत़्मइन होती है नीज़ इन का बयान सुनने वाले अपने अन्दर तब्दीली महसूस करते हैं। यक़ीनन येह सारी बहारें ए'तिकाफ़ की वज्ह से ही हैं इस के बा वुजूद अगर कोई शख़्स ए'तिकाफ़ करने के बा'द भी नेकियों की राह पर नहीं आता और उस के अन्दर किसी क़िस्म की तब्दीली नहीं होती तो येह उस का अपना नसीब है।

ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ताबेई़ बुज़ुर्ग हैं, इन के फ़रमान का ख़ुलासा है : बा'ज़ लोग इ़ल्मे दीन ह़ासिल करते हैं इस के बा वुजूद सुधरते नहीं बल्कि उन में ख़ूब बिगाड़ होता है जो फ़साद का बाइ़स बनता है।[1] या'नी अगर किसी के दिल में फ़साद का बीज मौजूद हो तो इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के बा वुजूद उस के दिल से फ़साद ही पैदा होगा कि वोह बीज दिन ब दिन परवरिश पाता रहेगा बिल आख़िर तनआवर दरख़्त बन कर फ़साद बरपा करेगा। क्यूं कि फल हमेशा बीज की मिस्ल ही ह़ासिल होता है, जैसा बीज बोया जाएगा वैसा ही फल मिलेगा। अगर गेहूं (या'नी

1... ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इ़ल्म की मिसाल तो बारिश के उस पानी की त़रह़ है जो आस्मान से साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ और मीठा नाज़िल होता है और दरख़्त उस को अपनी शाख़ों के ज़रीए़ जज़्ब कर लेते हैं। अब अगर दरख़्त कड़वा होता है तो बारिश का पानी उस की कड़वाहट में इज़ाफ़ा करता है और अगर वोह दरख़्त मीठा होता है तो उस की मिठास में इज़ाफ़ा करता है, बस यूंही इ़ल्म बज़ाते ख़ुद तो फ़ाएदे का बाइ़स है मगर जब ख़्वाहिशाते नफ़्स में गिरिफ़्तार इन्सान इसे ह़ासिल करता है तो येह इ़ल्म उस के तकब्बुर में मुब्तला होने का सबब बन जाता है और जब शरीफ़ुन्नफ़्स इन्सान को येह इ़ल्म ह़ासिल होता है तो येह उस की शराफ़त, इ़बादत, ख़ौफ़ो ख़शिय्यत और परहेज़ गारी में इज़ाफ़ा करता है। (حدیقہ ندیہ، 2/512)

गन्दुम) बोएंगे तो गेहूं मिलेंगे, जव बोएंगे तो जव मिलेंगे और चावल बोएंगे तो चावल मिलेंगे। इसी त़रह़ बा'ज़ लोगों के दिलों में बद बख़्ती और शरारत का बीज होता है, येह लोग इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर भी लें तो उस बीज की जड़ें इन के दिल में मज़बूत़ हो चुकी होती हैं यूं वोह लोग फ़साद पैदा करने का सबब बनते हैं। नीज़ जिस ख़ुश नसीब के दिल में शराफ़त और सआ़दत मन्दी का बीज होता है फिर वोह उस बीज की इ़ल्मे दीन के ज़रीए ख़ूब आबयारी करता है और उस में मज़ीद निखार पैदा करने की कोशिश करता है तो वोह शख़्स एक नेक इन्सान और आ़लिमे बा अ़मल बन कर मुआ़शरे में उभरता है।

अपने वक़्त की क़द्र कीजिये

ऐसे कई लोग मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ के लिये आते हैं जिन का अपनी इस्लाह़ के ह़वाले से कोई ज़ेह्न नहीं होता तो वोह अपने दोस्तों के साथ ग्रूप बना कर फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल होते हैं। अगर कोई दोस्त बाहर से कबाब समोसे ले आए तो वोह खाने में अपना वक़्त बरबाद कर रहे होते हैं। बा'ज़ तो मदनी मुज़ाकरे तक में शिर्कत नहीं करते ह़ालां कि मदनी मुज़ाकरा ए'तिकाफ़ में सब से अहम सिल्सिला होता है। उन के कानों तक मदनी मुज़ाकरे की आवाज़ ज़रूर पहुंचती है मगर दिल में नहीं उतरती क्यूं कि येह सुनने के लिये बैठे ही नहीं होते तो इस की बरकतों से भी मह़रूम हो जाते हैं। हां! जो लोग मस्जिद के अन्दर बैठ कर तवज्जोह से मदनी मुज़ाकरा सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं तो यक़ीनन उन के दिल पर भी असर होता है और वोह ढेरों बरकतें अपने दामन में समेट लेते हैं। लिहाज़ा मो'तकिफ़ीन को चाहिये कि वोह अपने वक़्त की

क़द्र करते हुए इसे फ़ुज़ूलिय्यात में ज़ाएअ़ करने के बजाए इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की कोशिश करें ।

सारा साल रमज़ानुल मुबारक का इन्तिज़ार

रमज़ानुल मुबारक की आमद में अभी कुछ माह बाक़ी हैं लिहाज़ा जिस से हो सके वोह निय्यत कर ले कि اِنْ شَآءَاللّٰه मदनी मर्कज फ़ैज़ाने मदीना में पूरे माहे रमज़ान का ए'तिकाफ़ करूंगा । मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ का निहायत ख़ूब सूरत माह़ोल होता है लिहाज़ा ह़त्तल इम्कान फ़ैज़ाने मदीना में ही ए'तिकाफ़ करने की कोशिश कीजिये, वरना अपने अपने शहरों में जहां दा'वते इस्लामी के तह़्त ए'तिकाफ़ करवाया जाता है वहां ए'तिकाफ़ करने की तरकीब बनाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه बे शुमार फ़वाइदो बरकात नसीब होंगे । अगर एक माह का ए'तिकाफ़ करना मुम्किन न हो तो दस दिन के ए'तिकाफ़ की तरकीब कीजिये अगर येह भी न हो सके तो ए'तिकाफ़ में आना जाना ही कर लीजिये मसलन किसी को नोकरी पर जाना है तो वोह जाए और अपना काम पूरा कर के वापस आ जाए और जहां ए'तिकाफ़ हो रहा है वहीं रहे, घर न जाए बल्कि नोकरी के बा'द सारा वक़्त ए'तिकाफ़ वालों के साथ ही गुज़ारे, उन की सोह़बत इख़्तियार करे, ऐसा करने से भी काफ़ी कुछ ह़ासिल हो जाएगा । اَلْحَمْدُلِلّٰه ! हमें सारा साल रमज़ानुल मुबारक का इन्तिज़ार रहता है बल्कि हम तो सारा साल येह दुआ मांगते हैं "اَللّٰهُمَّ بَلِّغْنَا رَمَضَانَ بِصِحَّةٍ وَّعَافِيَةٍ या'नी ऐ **अल्लाह** ! हमें सिह़्हतो आ़फ़ियत के साथ माहे रमज़ान से मिला दे ।" रमज़ानुल मुबारक की बरकतों के भी क्या कहने ! रमज़ानुल मुबारक की फ़ज़ाओं में जो कैफ़ो सुरूर होता है वोह दीगर अय्याम में नहीं पाया जाता, जैसे ही रमज़ानुल मुबारक का

चांद नज़र आता है तो दिल पर एक अ़जीब कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है और जैसे ही ईद का चांद नज़र आता है दिल ग़म में डूब जाता है कि हाए अफ़्सोस ! रमज़ान का बा बरकत और निहायत अ़ज़मतो शान वाला महीना हम से रुख़्सत हो गया, वोह सब कुछ चला गया जो रमज़ान की वज्ह से हमें नसीब हुवा था। **अल्लाह** पाक हमें सिह़्ह़तो आ़फ़ियत के साथ बार बार रमज़ानुल मुबारक का महीना नसीब फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मुअ़म्मर इस्लामी भाई और मदनी मर्कज़ में ए'तिकाफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पूरे माहे रमज़ान का ए'तिकाफ़ करने की निय्यत फ़रमा लीजिये, चाहे आप ने गुज़श्ता बरसों में एक माह का ए'तिकाफ़ किया हो या न किया हो और निय्यत करते ही इस की तय्यारी भी शुरूअ़ कर दीजिये। अगर निय्यत सच्ची हुई तो निय्यत करते ही इस का सवाब मिलना शुरूअ़ हो जाएगा। बा'ज़ ख़ुश नसीब तो ए'तिकाफ़ के ऐसे शैदाई होते हैं कि त़रह़ त़रह़ की आज़्माइशों के बा वुजूद वोह ए'तिकाफ़ करने से पीछे नहीं हटते, ख़ुसूसन हमारे मुअ़म्मर (या'नी बूढ़े) इस्लामी भाई सालहा साल से ए'तिकाफ़ कर रहे हैं, उन्हें मन्अ़ भी किया जाए तो नहीं मानते और किसी ह़ाल में अपने घर जाने के लिये तय्यार नहीं होते। चूंकि इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बहुत रश होता है तो मा'ज़ूर इस्लामी भाई और हमारे मुअ़म्मर बुज़ुर्ग सख़्त आज़्माइश में आ जाते हैं, इन को इस्तिन्जा वुज़ू के मुआ़मलात में काफ़ी परेशानी हो जाती है, इसी वज्ह से अब हम ने येह उसूल बना दिया है कि मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में 50 साल से ज़ाइद उ़म्र के इस्लामी भाइयों को ए'तिकाफ़ में न बिठाया जाए। अलबत्ता फ़ैज़ाने मदीना में बा'ज़ ऐसे मुअ़म्मर इस्लामी भाई भी हैं जिन की

उ़म्र 70 बरस हो चुकी है लेकिन येह काफ़ी अ़र्से से फ़ैज़ाने मदीना में ही ए'तिकाफ़ कर रहे हैं लिहाज़ा सिर्फ़ उन इस्लामी भाइयों को फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ की इजाज़त है क्यूं कि अ़र्सए दराज़ से फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ करने की वज्ह से उन इस्लामी भाइयों को काफ़ी तजरिबा हो चुका है, उन्हें मदनी मर्कज़ के उसूलों और जद्वल वग़ैरा का इ़ल्म होता है, इस वज्ह से उम्मीद है कि येह दीगर इस्लामी भाइयों की तक्लीफ़ का सबब नहीं बनेंगे। नए आने वाले मुअ़म्मर इस्लामी भाई जिन की उ़म्र 50 बरस से ज़ाइद हो उन्हें फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ करने की इजाज़त नहीं क्यूं कि उन्हें फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ का तजरिबा नहीं होगा चूंकि पहले ही उ़म्र रसीदा होने की वज्ह से जिस्म काफ़ी कमज़ोर हो चुका होगा फिर ए'तिकाफ़ के जद्वल की वज्ह से मज़ीद कमज़ोरी हो जाएगी, अगर येह बीमार हो गए तो इन्हें संभालना मुश्किल होगा। नीज़ इस्तिन्जा ख़ानों और वुज़ू ख़ानों पर शदीद भीड़ होने की वज्ह से भी येह परेशान हो जाएंगे लिहाज़ा ऐसे मुअ़म्मर इस्लामी भाई मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ करने के लिये तशरीफ़ न लाएं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/231)

सुवाल : क्या इस्लामी बहनें इज्तिमाई ए'तिकाफ़ कर सकती हैं ?

जवाब : जी नहीं ! इस्लामी बहनें इज्तिमाई ए'तिकाफ़ नहीं कर सकतीं। क्यूं कि औ़रत के लिये मस्जिदे बैत या'नी घर का वोह हि़स्सा जो उस ने नमाज़ पढ़ने के लिये मख़्सूस किया हो उसी में ए'तिकाफ़ करने की इजाज़त है। (درمختار، 3/494 ماخوذاً) लिहाज़ा अगर किसी इस्लामी बहन को ए'तिकाफ़ करना हो तो वोह सिर्फ़ मस्जिदे बैत ही में करे। अगर घर में कोई जगह नमाज़ पढ़ने के लिये मख़्सूस न हो तो ए'तिकाफ़ से पहले कोई जगह जैसे

घर का कोई कमरा या हिस्सा मख़्सूस कर ले कि वोह उसी जगह नमाज़ पढ़ेगी फिर वहीं ए'तिकाफ़ भी कर ले। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/234)

सुवाल : मैं ए'तिकाफ़ करना चाहता हूं, मुझे येह बताइये कि दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले एक माह के ए'तिकाफ़ में कोई कोर्स भी करवाया जाता है ?

जवाब : एक माह के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में सिर्फ़ कोर्स नहीं होता बल्कि कोर्सिज़ होते हैं और बहुत कुछ सीखने को मिलता है। अलबत्ता इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के दौरान कोई Proper कोर्स नहीं करवाया जाता। लेकिन मज्मूई तौ़र पर बहुत कुछ सीखने को मिलता है। रोज़ाना दो मदनी मुज़ाकरे होते हैं जो एक अ़र्से से होते आ रहे हैं, सिह़्ह़त ने साथ दिया तो اِنْ شَآءَاللّٰه इस बार भी दो मदनी मुज़ाकरे होंगे। इस के इलावा नमाज़ सिखाई जाती है, दुआ़एं वग़ैरा याद करवाई जाती हैं और भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है, लिहाज़ा एक माह का ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत ज़रूर ह़ासिल कीजिये। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/244)

सुवाल : मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो मे'यार बयान फ़रमा दीजिये कि किस त़रह़ के इस्लामी भाइयों को ए'तिकाफ़ के लिये लाया जाए ?

जवाब : इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के लिये सुलझे हुए इस्लामी भाइयों को लाना चाहिये, येह नहीं कि किसी को भी ले कर आ जाएं और इधर उधर से पैसे जम्अ़ कर के 80 साल के बूढ़े ह़ज़रात को ले आएं। कोई बेचारा फ़ालिज का मरीज़ है तो किसी की ह़ालत ऐसी है जो बात ही नहीं समझ सकता और तरबियती ह़ल्क़ों के बीच में सो जाए, ग़ुस्सा करे, इस्लामी

भाइयों को झाड़े, इस्तिन्जा ख़ानों में भीड़ हो तो वहां लड़ाई शुरूअ़ कर दे या बेचारा बीमार हो जाए और अस्पताल का बिस्तर संभाल ले। ऐसों को तक्लीफ़ न दी जाए कि इन के कुछ न कुछ मसाइल ज़रूर होते हैं। इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शिर्कत करने वालों की उ़म्र 50 साल से ज़ियादा न हो इस से कम ही होनी चाहिये। ऐसे इस्लामी भाइयों को तरजीह़ दी जाए जिन की उ़म्र 50 साल से कम हो और उन्हें कोई बीमारी भी न हो। बा'ज़ इस्लामी भाई केन्सर के मरीज़ों को ले आते हैं। अगर किसी को गले का केन्सर है, हमें 112 फ़ीसद उस से हमदर्दी है मगर येह जब मो'तकिफ़ीन के साथ खाने के लिये बैठेगा तो सब खा रहे होंगे और येह शक्ल देख रहा होगा, इस त़रह़ दूसरे मो'तकिफ़ीन किस त़रह़ खाएंगे! उन को इस पर तर्स आएगा और उन का खाना दुश्वार हो जाएगा। ऐसा मरीज़ नहीं होना चाहिये जिस से दूसरों को परेशानी हो और येह ख़ुद भी परेशान हो जाए और लाने वाले को कोस्ता रहे, फिर ज़िद करे कि मुझे वापस घर पहुंचा दो, मुझे क्या मा'लूम कि यहां इतना रश होगा वग़ैरा लिहाज़ा मो'तकिफ़ीन लाने के लिये Quantity नहीं Quality देखिये। बा'ज़ अवक़ात केन्सर का ऐसा मरीज़ ले आते हैं जिस के ज़ख़्म से बदबू आ रही होती है, जब कि शर्ई मस्अला येह है कि जिस के ज़ख़्म, मुंह या कपड़ों से बदबू आ रही हो उसे मस्जिद में दाख़िल होना मम्नूअ़ है।[1]

1... आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं: बच्चा और मज्नून और मज्ज़ूम और बरस और बदबू के ज़ख़्म वाले और कच्चा लहसन, पियाज़ खाने वाले और मुफ़्सिद (फ़साद करने वाले) और मूज़ी (ईज़ा देने वाले) शर्अ़ ने इन्हें मस्जिद में आने का ह़क़ न दिया बल्कि मस्जिद से दूर करने का हुक्म दिया। (इज़्हारुल ह़क़्क़िल जली, स. 64 मुल्तक़त़न)

मसाजिद में ना समझ बच्चों को न लाएं

येह भी ज़ेह्न में रखिये कि रमज़ानुल मुबारक में मुलाक़ात की तरकीब नहीं हो पाती क्यूं कि रात छोटी होती है, मदनी मुज़ाकरा भी नमाज़े तरावीह़ के बा'द शुरूअ़ होता है फिर सह़री का वक़्फ़ा भी करना होता है। बा'ज़ इस्लामी भाई बच्चों को ले आते हैं और मुलाक़ात के लिये ज़िद करते हैं कि मुलाक़ात कर लो। आदमी बच्चों पर रह़्म खा कर मुलाक़ात कर भी ले तो येह डंका बजा देंगे कि हमारे बच्चों की मुलाक़ात हो गई है तो अगले दिन 10 बच्चे और आ जाएंगे। फिर येही बच्चे मस्जिद में शोरो ग़ुल करते, एक दूसरे के पीछे दौड़ते और कबड्डी खेलना शुरूअ़ कर देते हैं, वालिद नमाज़े तरावीह़ पढ़ रहा होता है और बच्चा पीछे शोर कर रहा होता है। बच्चों के ह़वाले से येह मस्अला याद रखिये कि ऐसा बच्चा जिस के बारे में ग़ालिब गुमान हो कि येह पेशाब कर देगा उसे मस्जिद में लाना जाइज़ नहीं और ऐसा बच्चा जिस के बारे में ग़ालिब गुमान हो कि येह बता देगा तो उसे मस्जिद में लाना मक्रूहे तन्ज़ीही या'नी ना पसन्दीदा है। (درمختار مع ردالمحتار، 2/518) और अगर ऐसा बच्चा है जो मस्जिद में शोर मचाएगा, इधर उधर भागेगा, मस्जिद का एह़तिराम पामाल करेगा नीज़ नमाज़ियों की तक्लीफ़ का बाइस बनेगा, भले 10 साल का ही क्यूं न हो बाप को उस के बारे में इ़ल्म हो कि येह ऐसा ऐसा करेगा तो उसे मस्जिद में लाना गुनाह होगा।[1] ऐसे बच्चे

1... आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर (बच्चों से) नजासत का ज़न्ने ग़ालिब हो तो उन्हें मस्जिद में आने देना ह़राम और ह़ालत मोह़तमल व मश्कूक हो तो मक्रूह। अगर बच्चे बल्कि बूढ़े भी बे तमीज़, ना मुहज़्ज़ब हों, ग़ुल मचाएं, बे ह़ुर्मती करें, मस्जिद में न आने दिये जाएं।

(फ़तावा रज़विय्या, 16/458 मुल्तक़त़न)

उ़मूमन उन मसाजिद में होते हैं जो आबादी वाले अ़लाक़ों में बनी होती हैं, कई इस्लामी भाइयों को इस का तजरिबा होगा कि येह किस क़दर हल्ला गुल्ला करते हैं।

बच्चों को ए'तिकाफ़ में लाने के नुक़्सानात

बा'ज़ बच्चे आठ नव साल के होते हैं और समझदार भी होते हैं, अकेले होंगे तो शराफ़त से बैठेंगे और नमाज़ वग़ैरा भी पढ़ेंगे लेकिन जहां येह एक से दो हुए सारी मस्जिद सर पर उठा लेंगे। लिहाज़ा अगर कोई कहे कि मेरा बच्चा शरीफ़ है, कुछ नहीं करेगा और दूसरा शख़्स भी येही सोच कर अपने बच्चे को मस्जिद में ले आए तो येह दोनों शरीफ़ मिल कर शराफ़त की धज्जियां बिखेर देंगे, बहुत सों को इस का तजरिबा भी होगा। बेहतर येही है कि बच्चों को अपने साथ न लाया जाए। अगर कोई बच्चा इस त़रह़ करे तो उसे रोकना वाजिब होगा। इस के इ़लावा और भी काफ़ी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा मसलन मदनी मुज़ाकरे में कोई ऐसा मौज़ूअ़ चल रहा हो जिसे सुनने में भी मज़ा आ रहा है और अचानक बच्चा बोले कि अब्बू भूक लग रही है या पानी पीना है फिर उस वक़्त पानी पिलाने जाएंगे तो जो बयान हो रहा था उस से बच्चे का वालिद तो महरूम होगा ही साथ साथ दो चार लोग और भी उस की वज्ह से परेशान होंगे। फिर बच्चा कहेगा अब्बू मुझे पेशाब आ रहा है तो उसे ले कर जाना पड़ेगा, नहीं ले कर गए तो वोह वहीं कर देगा। बच्चे इस त़रह़ की गड़बड़ कर देते हैं, कभी कहेगा नींद आ रही है क्यूं कि समझ नहीं आता तो फिर नींद आती है, अब उन को सुलाने का मस्अला होता है, न येह ख़ुद सुनते समझते हैं न वालिद को सुनने समझने देते हैं लिहाज़ा मेहरबानी कर के बच्चों को

अपने साथ न लाएं और येह मदनी इल्तिजा सिर्फ़ माहे रमज़ान के लिये ही नहीं बल्कि पूरे साल के लिये ज़ेहन नशीन कर लीजिये। Quantity के बजाए Quality पर नज़र रखिये, चाहे बहुत सारों की बजाए चन्द ही इस्लामी भाई ला सकें। मगर जिन इस्लामी भाइयों को लाया जाए वोह सुलझे हुए और ख़ौफ़े ख़ुदा वाले हों कि उन को देख कर **अल्लाह** याद आ जाए, न कि ऐसे हों कि कोई बाहर का बन्दा आ कर देखे तो बदज़न हो कर चला जाए और कहे कि हम ने तो बड़ी ता'रीफ़ सुनी थी जब कि यहां तू तुकार और लड़ाई झगड़े हो रहे हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/245)

सुवाल : कितनी उ़म्र के इस्लामी भाइयों को ए'तिकाफ़ में बिठाया जाए ?[1]

जवाब : जहां जहां इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़ या पूरे महीने के ए'तिकाफ़ की तरकीब हो वहां और बिल ख़ुसूस मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के लिये इस बात का ख़याल रखा जाए कि मो'तकिफ़ 20 साल से छोटा और 50 साल से बड़ा न हो क्यूं कि बड़ी उ़म्र के बुज़ुर्ग संभाले नहीं जाएंगे और इन्हें जब दौराने मदनी ह़ल्क़ा और मदनी मुज़ाकरा नींद आएगी तो येह टांगें फैला कर बिल्कुल बीच में सो जाएंगे और फिर इन्हें कोई रोक भी नहीं पाएगा। इस लिये कि अगर बूढ़ों को कुछ कहा जाए तो उन्हें ग़ुस्सा भी जल्दी आ जाता है। बूढ़े बेचारे मा'ज़ूर और बीमार होते हैं और उन का ह़ाफ़िज़ा, हाज़िमा और हर उ़ज़्व कमज़ोर हो जाता है, सिर्फ़ ज़बान त़ाक़त वर होती है जिस से स्टेट फ़ायर होते हैं तो यूं बा'ज़ अवक़ात बूढ़े ख़ुद भी तक्लीफ़ उठाते हैं और दूसरों के लिये भी तक्लीफ़ का बाइ़स बन जाते हैं, इस लिये

1... येह सुवाल शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इनायत किया हुवा है।

मा'ज़ूरों और बूढ़ों को ए'तिकाफ़ में न लाया जाए। मेट्रिक के तुलबा और जामिअ़तुल मदीना और आ़शिक़ाने रसूल के मदारिस के तुलबाए किराम अपना कार्ड दिखा कर ए'तिकाफ़ कर सकते हैं और अगर इन में कोई 20 साल से कम उ़म्र का भी हो तो उसे भी शायद ए'तिकाफ़ में बैठने की रिआ़यत है और येह सब इस लिये है ताकि तुलबा छुट्टियों में इधर उधर ख़्वार होने के बजाए **अल्लाह** पाक के घर में बैठ जाएं और दीन सीख लें कि इस से इन को फ़ाएदा होगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/323)

सुवाल : जो इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में सीखने सिखाने के मदनी ह़ल्क़ों में शिर्कत नहीं करते वोह ए'तिकाफ़ में बैठना चाहें तो क्या किया जाए ?[1]

जवाब : हमारी मजालिस और ज़िम्मेदारान इस्लामी भाई ए'तिकाफ़ के लिये ऐसे अफ़्राद के कार्ड हरगिज़ न बनाएं। ए'तिकाफ़ में एक ता'दाद ऐसी भी आती है कि जिसे दुआ़एं और नमाज़ वग़ैरा सिखाने के लिये लगाए गए मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के ह़ल्क़े में शिर्कत करने से कोई दिलचस्पी नहीं होती, येह ए'तिकाफ़ में सिर्फ़ खाते पीते और जान बनाते हैं, ऐसे लोग चौपाल लगाते हैं और मस्जिद के बाहर सह़न में बैठ कर गपें मार रहे होते हैं और उन से मिलने के लिये आने वालों में से कोई उन के लिये खिचड़ा ला रहा होता है और कोई खिचड़ी ला रहा होता है जिसे येह सब मिल कर खा रहे होते हैं तो ऐसों से हाथ जोड़ कर मा'ज़िरत है कि येह ए'तिकाफ़ में न आएं और हमें अपने शर से बचाएं। हमें ए'तिकाफ़ में बिठाने के लिये वोह इस्लामी भाई चाहिएं कि जो ए'तिकाफ़ में इ़बादत व तिलावत करें,

1... येह सुवाल शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इ़नायत किया हुवा है।

फ़र्ज़ नमाज़ें बा जमाअ़त पढ़ें और सुन्नतें और दुआ़एं सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों और मदनी मुज़ाकरों में 100 फ़ीसद शिर्कत करें। याद रखिये ! हमें ए'तिकाफ़ में मो'तकिफ़ीन की भीड़ और Quantity (या'नी ता'दाद) नहीं बल्कि Quality (या'नी मे'यार) चाहिये। जो इस्लामी भाई मो'तकिफ़ीन की कसीर ता'दाद ले कर आते हैं उन्हें चाहिये कि भले वोह चन्द इस्लामी भाई ले कर आएं मगर उन में Quality (या'नी मे'यार) वाले इस्लामी भाई हों जो यहां से सीख कर जाएं। मगर आ़म तौ़र पर Quality (या'नी मे'यार) नहीं Quantity (या'नी मिक़्दार) होती है और ऐसे अफ़राद ए'तिकाफ़ के लिये आते हैं कि जिन्हें सीखने सिखाने में दिलचस्पी नहीं होती, वोह दूसरों को भी तंग कर रहे होते हैं और इस के साथ साथ येह कबाब समोसे खाते हैं और फिर बीमार हो कर हमारे क्लीनिक की दवाइयां भी खा जाते हैं। दा'वते इस्लामी के तह़्त हर जगह मो'तकिफ़ीन के लिये क्लीनिक का एहतिमाम नहीं होता अलबत्ता मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में एक छोटा सा क्लीनिक क़ाइम किया जाता है जिस में मह़्दूद दवाएं होती हैं और कुछ डॉक्टर रज़ाकाराना तौ़र पर तशरीफ़ लाते हैं। अब ऐसा नहीं कि जो बेचारा बीमार हो कर क्लीनिक जाए उस के बारे में येह कहा जाए कि येह खा खा कर बीमार हुवा है क्यूं कि ए'तिकाफ़ में रश होता है और बा'ज़ लोगों की त़बीअ़तों में नज़ाकत होती है जिस के बाइ़स उन्हें रश की वज्ह से नींद नहीं आती तो बे आरामी की वज्ह से वोह बीमार हो जाते हैं। बहर ह़ाल अपनी सिह़्ह़त का ख़याल रखिये और बस उन लोगों को ए'तिकाफ़ के लिये लाइये जो दीन का जज़्बा रखते हों और रिज़ाए इलाही पाने की ख़ातिर आएं। बक़िय्या को न लाइये और न ऐसों को ए'तिकाफ़ कार्ड दिया जाए। बा'ज़ों

के बारे में तो मजलिसे ए'तिकाफ़ को भी पता चल जाता होगा कि येह ए'तिकाफ़ में ख़ाली खाएं पियेंगे और अपना शर दूसरों तक पहुंचाएंगे तो मो'तकिफ़ीन को ऐसे लोगों के शर से बचाना ज़रूरी है।

सैरो तफ़रीह़ करने वालों को भी ए'तिकाफ़ में न लाया जाए

इसी त़रह़ सैरो तफ़रीह़ करने वालों को भी ए'तिकाफ़ में न लाया जाए। चूंकि बा'ज़ अ़लाक़ों में समुन्दर नहीं है इस लिये एक ता'दाद समुन्दर देखने के लिये भी ऐसे अ़लाक़ों से ए'तिकाफ़ में आ जाती है और फिर येह समुन्दर देखने जाते हैं और वहां ऊंट पर बैठ कर तस्वीरें खिंचवाते हैं जिन्हें वोह बा'ज़ अवक़ात सोशल मीडिया पर भी आ़म कर देते हैं तो ऐसों को दा'वते इस्लामी वाला न कहा जाए। दा'वते इस्लामी समुन्दर की त़रह़ है और जब समुन्दर में जाल फेंका जाए तो उस में मछली भी आएगी, केकड़ा भी आएगा और हो सकता है दरियाई सांप भी आ जाए तो इस त़रह़ के इस्लामी भाई भी ए'तिकाफ़ में आते हैं जो दा'वते इस्लामी को बदनाम करते हैं, लिहाज़ा घूमने फिरने वालों को भी ए'तिकाफ़ के लिये मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना न लाया जाए। हमारे यहां जो समुन्दर है उस का नाम "बह्रे अ़रब" है तो अगर किसी ने समुन्दर देखना है तो वोह ए'तिकाफ़ के इ़लावा आए और इस निय्यत से समुन्दर देखे कि येह ह़िजाज़े मुक़द्दस को चूमने जाता है। पहले यहां के समुन्दर से सफ़ीना (समुन्दरी जहाज़) भी ह़ाजियों का क़ाफ़िला ले कर जद्दा शरीफ़ जाया करता था। याद रखिये !

समुन्दर देखना गुनाह नहीं है मगर जब ए'तिकाफ़ के लिये आएं तो पूरा वक़्त यहीं बसर करें और समुन्दर और बाज़ारों का रुख़ न करें। येह बात भी ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि ए'तिकाफ़ के लिये सुवाल करना जाइज़ नहीं है। लिहाज़ा जब ए'तिकाफ़ के लिये आएं तो किसी से इस त़रह़ का सुवाल न करें कि मुझे दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ के लिये जाना है और मेरे पास आने जाने का किराया और जेब ख़र्ची नहीं है लिहाज़ा आप मेरी मदद कर दीजिये।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/324 मुल्तक़त़न)

सुवाल : क्या मस्जिदे ह़राम और मस्जिदे नबवी शरीफ़ में आबे ज़मज़म पीने के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत ज़रूरी है ?

जवाब : आबे ज़मज़म शरीफ़ पीने या खाना खाने के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत नहीं हो सकती और अगर कर ली तो येह निय्यत मो'तबर नहीं। ए'तिकाफ़ की निय्यत सिर्फ़ सवाब के लिये कर सकते हैं। मस्जिदे ह़राम या मस्जिदे नबवी में भी ग़ैरे मो'तकिफ़ या'नी जिस ने ए'तिकाफ़ की निय्यत नहीं की उस के लिये आबे ज़मज़म पीना जाइज़ नहीं। अगर पहले ए'तिकाफ़ की निय्यत नहीं की थी और अब आबे ज़मज़म पीना है तो इस के लिये येह निय्यत नहीं की जा सकती बल्कि सवाब की निय्यत से ए'तिकाफ़ की निय्यत करें, फिर ज़िक्रो दुरूद पढ़ें मसलन बारह मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ लें, अब आबे ज़मज़म पीना जाइज़ हो जाएगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/451)

अगले हफ़्ते का रिसाला

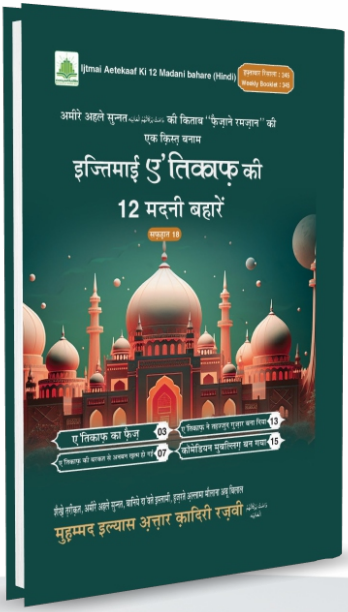

Ijtmai Aetekaaf Ki 12 Madani bahare (Hindi)
एक क़िस्त बनाम
इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की
12 मदनी बहारें
ए'तिकाफ़ का फ़ैज़
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी